प्रत्यारोपण एवं उचित दूरी

जड़युक्त कटिंग को 30 से.मी. X 30 से.मी. के अंतराल पर प्रत्यारोपित करना चाहिए। इस तरह 1 हेक्टेयर में लगभग 1,10,000 कटिंग लगाई जा सकती है। कटिंग को जल भराव की स्थिति से बचाने के लिए क्यारियों में लगाना चाहिए।

सहरोपण / मिश्रित कृषि

चूंकि यह लता प्रजाति नम एवं छायादार स्थिति में अच्छी उगती है, अतः इसे सहारा देने के लिए झाड़ी प्रजाति के पौधों के साथ में लगाया जा सकता है, या इस प्रजाति को किसी वृक्ष प्रजाति के नीचे भी लगाया जा सकता है।

रखरखाव

प्रति हेक्टेयर 2टन गोबर खाद मिट्टी में अच्छी तरह मिला कर जून में भूमि तैयार कर लेनी चाहिए। समय–समय पर खरपतवार को हाथ से निकालकर फेंक देना चाहिए। जुलाई–सितम्बर माहों में प्रत्येक 15 दिवस के अंदर खरपतवार निकालना अति आवश्यक है।

सिंचाई

वर्षा ऋतु में कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। वर्षा ऋतु उपरांत पांच से सात दिवस के अंदर सिंचाई आवश्यक है।

फसल परिपक्वता एवं विदोहन प्रबंधन

इसकी फसल 10–12 महिनों में परिपक्व हो जाती है। पत्तियां, तना एवं जड़ संग्रहण समय मार्च–अप्रैल उपयुक्त पाया गया है।

विदोहन उपरांत प्रबंधन

ताजी संग्रहित जड़ों को अच्छी तरह धोकर, पत्तियां एवं तनो के साथ 2–3 दिन तक धूप में तथा उसके बाद 10 दिनों तक छांव में सुखाना चाहिए जब तक कि उससे अतिरिक्त नमी न निकल जाए।

उत्पादन एवं लागत

जड़ का अनुमानित उत्पादन 1500 कि.ग्रा./हेक्टेयर है। इसकी खेती के लिये प्रथम वर्ष में लगभग 50000 रुपये / हेक्टेयर लागत आती है जो कि बाद के वर्षों में लगभग आधी रह जाती है। वर्तमान में IndiaMART के अनुसार बाजार भाव लगभग 60–70 रुपये प्रति किलोग्राम है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

पादप कार्यिकी विभाग

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726

ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

निशोथ

(*Operculina turpethum* Linn.)

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

निशोथ

(*Operculina turpethum* Linn.)

कुल	:	कान्वालवुलेसी (Convolvulaceae)
हिन्दी नाम	:	निशोथ
आयुर्वेदिक नाम	:	त्रिवृत, दंती
व्यापारिक नाम	:	तुरपीठ, निशोथ
उपयोगी भाग	:	जड़ एवं तना

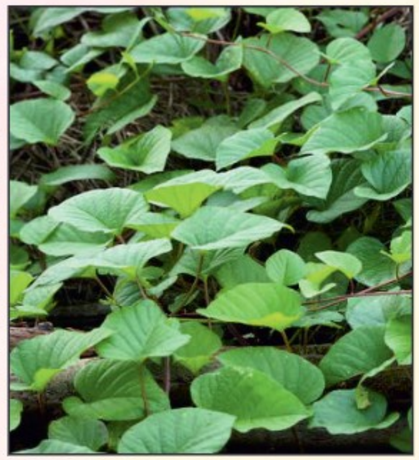

यह एक बहुवर्षीय लता (चढने वाला पौधा) है। इसक पत्तियाँ दिल के आकार की, चिकनी हरी रंग की होती है। फूल सफेद या हल्के गुलाबी रंग के, आकर्षक, घंटीनुमा आकार के होते है। निषोथ की जड़ का उपयोग मुख्य रूप से विरेचक (पेट साफ करने वाला) यकृत विकार एवं त्वचा रोग में किया जाता है। कंदिल जड़ों को जलंघर विषाद (melancholia), गठिया, कुष्ठ, लकवा एवं वात रोगों में उपयोग किया जाता है।

रासायनिक घटक

निशोथ में लगभग 9.13 प्रतिशत रेजिन होता है जो कि अल्फा एवं बीटा टर्पेथिन, ग्लाइकोसाइडस के अतिरिक्त कोमेरिन, स्कोपोलेटिन एवं शर्करा का मिश्रण होता है।

आकारिकी

इसकी जड़, लंबी, गोल, गूदेदार एवं बहुशाखित होती है। तना लंबा, शीघ्र वृद्धि करने वाला, गोल, मुड़ा हुआ होता है। पत्तियां 5–10 X 1.3 – 7 से.मी. लंबी, अण्डाकार अथवा गोलाकार, दोनों सतहों पर रोमिल होती है। तरूण पत्तियों में रेशमी रोम अधिक पाए जाते है। पत्तियों में मध्यम जालिकायुक्त शिराविन्यास पाया जाता है।

पुष्पीय लक्षण

पुष्पक्रम साइम (Cyme) प्रकार का होता है। पुष्प डंठल छोटा, लगभग 2–5.5 से.मी. लंबा होता है। पुष्प के सहपत्र लंबे, प्रायः गुलाबी रंग के होते है। पुष्प के बाहरी बाह्यदल 2.2 से.मी. लंबे एवं चौड़े होते है जबकि आंतरिक बाह्यदल छोटे होते है। दलपुंज सफेद, 3.5 से.मी. लंबा होता है। पुष्पन एवं फलन में दो बार सितम्बर– नवम्बर एवं मार्च–मई में होता है।

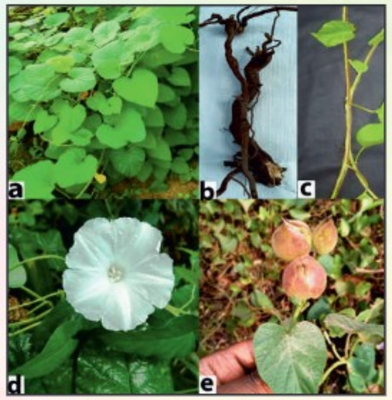

वितरण

पौधा सम्पूर्ण भारत में शुष्क पर्णपाती एवं आर्द्र पर्णपाती क्षेत्रों में पाया जाता है।

मृदा एवं जलवायु

बलुई–दोमट एवं चिकनी दोमट मिट्टी वाले आई उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में इस प्रजाति का कृषिकरण अच्छा होता है। नम एवं छायादार स्थान इस प्रजाति के लिये अनुकूल स्थिति है।

प्रवर्धन

प्रजाति का प्रवर्द्धन बीज एवं कायिक प्रवर्द्धन द्वारा आसानी से किया जा सकता है। औषधीय उपयोग की दृष्टि से सफेद निशोथ बेहतर मानी गई है। तने की कटिंग जिसमें 2नोड्स (संधियाँ) हो, सीधे ही जुलाई माह में प्रत्यारोपित की जा सकती है, अथवा मार्च–अप्रैल में लगाई गई कटिंग में जह आने के पश्चात् जून–जुलाई में प्रत्यारोपित करना चाहिए। बीज संग्रहण हेतु अप्रैल–मई का समय उपयुक्त पाया गया है। निशोथ की 3 किस्में पाई जाती है। पहली सफेद पुष्प वाली दूसरी काले पुष्प वाली एवं तीसरी लाल पुष्प वाली। सफेद निशोथ उपरोक्त किस्मों में सर्वोत्तम पाई गई है।

कृषिकरण

पौध शाला तकनीक - पौध तैयार करना

पौध तैयार करने हेतु कटिंग जिसमें 2 नोड्स (गांठ) हो एवं लगभग 10से. मी. लंबी हो, उपयुक्त होती है। इन कटिंग्स को पॉलीबैग या मिस्ट चैम्बर में लगाना चाहिए। पॉलीबैग में रेत, मिट्टी एवं एफ.वाय.एम. का 1:11 का मिश्रण भर कर कटिंग लगाना चाहिए। पौध तैयार करने हेतु बीज का उपयोग भी किया जा सकता है जिसके लिए अप्रैल–मई में बो देना चाहिए।

एक हेक्टेयर में बीज से पौधे तैयार करने हेतु लगभग 2 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बीज को 24 घण्टे पानी में भिगोकर एवं बीज का आवरण घिसकर धोने से लगभग 95 प्रतिशत बीज अंकुरित कराए जा सकते है। बीज बोने के 7.10 दिनों के बाद अंकुरण प्रारंभ हो जाता है।

रोपण तकनीक

भूमि तैयार करना एवं खाद अनुप्रयोग

खेत की 2 बार गहरी जुताई कर भूमि तैयार करना चाहिए। खेत में पानी भराव की स्थिति निर्मित न हो, इसके लिए उन्नत जल निकासी व्यवस्था कर खेत को खरपतवार मुक्त कर देना चाहिए। लगभग 2 टन एफ. वाय.एम. मिश्रण प्रति हेक्टेयर आवश्यक है।